सपना और साहस

सभ्यता के कायदे से जूता पहनकर
सपनों में टहलना गुनाह है

जब रात का सन्नाटा तारी हो
पेट भरा हो
तब अपने भीतर के शोर और सवाल को
होशियार लोग
पाँव से निकाले गये मौजे की तरह
अपने कीमती जूते में घुसेड़ कर
किसी बहुराष्ट्रीय सपने में घुसने की तैयारी करते हैं

सभ्यता के कायदे से जूता पहनकर
सपनों में टहलना गुनाह है

सपनों को शोर पसंद नहीं
सपनों को सवाल पसंद नहीं

निस्पंद प्रवाह सपना को प्रिय है
उड़ते हुए बादलों के टुकड़ों के संग
फूलों की घाटी में खेलती हुई चाँदनी का
सपनों में होना बेहद जरूरी है

सपनों के लिए जरूरी है
और भी बहुत कुछ -
- जैसे साहस

सपना विहीन जीवन व्यर्थ है
और साहस विहीन सपना ऐय्याशी